परमार राजवंश का इतिहास

samanyagyan.com/hindi/gk-paramara-dynasty-history-rulers

परमार राजवंश का इतिहास एवं महत्वपूर्ण तथ्यों की सूची: (Parmar Dynasty History and Important Facts in Hindi)

परमार राजवंश:

परमार वंश मध्यकालीन भारत का एक राजवंश था। इस राजवंश का अधिकार धार और उज्जयिनी राज्यों तक था। ये 9वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक शासन करते रहे। परमार वंश का आरम्भ नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में नर्मदा नदी के उत्तर मालवा (प्राचीन अवन्ती) क्षेत्र में उपेन्द्र अथवा कृष्णराज द्वारा हुआ था। इस वंश के शासकों ने 800 से 1327 ई. तक शासन किया। मालवा के परमार वंशी शासक सम्भवतः राष्ट्रकूटों या फिर प्रतिहारों के समान थे।

परमार का अर्थ:

परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है। प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

परमार राजवंश का इतिहास:

परमार (पँवार) एक राजवंश का नाम है, जो मध्ययुग के प्रारंभिक काल में महत्वपूर्ण हुआ। चारण कथाओं में इसका उल्लेख राजपूत जाति के एक गोत्र रूप में मिलता है। परमार सिंधुराज के दरबारी कवि पद्मगुप्त परिमल ने अपनी पुस्तक 'नवसाहसांकचरित' में एक कथा का वर्णन किया है। ऋषि वशिष्ठ ने ऋषि विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध में सहायता प्राप्त करने के लिये भाबू पर्वत के अग्निकुंड से एक वीर पुरुष का निर्माण किया जिनके पूर्वज सुर्यवंशी क्षत्रिय थे। इस वीर पुरुष का नाम परमार रखा गया, जो इस वंश का संस्थापक हुआ और उसी के नाम पर वंश का नाम पड़ा। परमार के अभिलेखों में बाद को भी इस कहानी का पुनरुल्लेख हुआ है। इससे कुछ लोग यों समझने लगे कि परमारों का मूल निवासस्थान आबू पर्वत पर था, जहाँ से वे पड़ोस के देशों में जा जाकर बस गए। किंतु इस वंश के एक प्राचीन अभिलेख से यह पता चलता है कि परमार दक्षिण के राष्ट्रकूटों के उत्तराधिकारी थे।

परमार वंश की एक शाखा आबू पर्वत पर चंद्रावती को राजधानी बनाकर, 10वीं शताब्दी के अंत में 13वीं शताब्दी के अंत तक राज्य करती रही। इस वंश की दूसरी शाखा वगद (वर्तमान बाँसवाड़ा) और डूंगरपुर रियासतों में उद्भुतुक बाँसवाड़ा राज्य में वर्त्तमान अर्थुना की राजधानी पर 10वीं शताब्दी के मध्यकाल से 12वीं शताब्दी के मध्यकाल तक शासन करती रही। वंश की दो शाखाएँ और ज्ञात हैं। एक ने जालोर में, दूसरी ने बिनमाल में 10वीं शताब्दी के अंतिम भाग से 12वीं शताब्दी के अंतिम भाग तक राज्य किया।

परमार राजवंश के शासकों की सूची:

- उपेन्द्र (800 से 818 तक)
- वैरीसिंह प्रथम (818 से 843 तक)
- सियक प्रथम (843 से 893 तक)
- वाकपति (893 से 918 तक)

- वैरीसिंह द्वितीय (918 से 948 तक)
- सियक द्वितीय (948 से 974 तक)
- वाकपतिराज (974 से 995 तक)
- सिंधुराज (995 से 1010 तक)
- भोज प्रथम (1010 से 1055 तक), समरांगण सूत्रधार के रचयिता
- जयसिंह प्रथम (1055 से 1060 तक)
- उदयादित्य (1060 से 1087 तक)
- लक्ष्मणदेव (1087 से 1097 तक)
- नरवर्मन (1097 से 1134 तक)
- यशोवर्मन (1134 से 1142 तक)
- जयवर्मन प्रथम (1142 से 1160 तक)
- विंध्यवर्मन (1160 से 1193 तक)
- सुभातवर्मन (1193 से 1210 तक)
- अर्जुनवर्मन I (1210 से 1218 तक)
- देवपाल (1218 से 1239 तक)
- जयतुगीदेव (1239 से 1256 तक)
- जयवर्मन द्वितीय (1256 से 1269 तक)
- जयसिंह द्वितीय (1269 से 1274 तक)
- अर्जुनवर्मन द्वितीय (1274 से 1283 तक)
- भोज द्वितीय (1283 से ? तक)
- महालकदेव (? से 1305 तक)
- संजीव सिंह परमार (1305 – 1327 तक)

परमार वंश के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य:

- इस वंश के प्रारम्भिक शासक उपेन्द्र, वैरसिंह प्रथम, सीयक प्रथम, वाक्पति प्रथम एवं वैरसिंह द्वितीय थे।
- परमारों की प्रारम्भिक राजधानी उज्जैन में थी पर कालान्तर में राजधानी 'धार', **मध्य प्रदेश** में स्थानान्तरित कर ली गई।
- इस वंश का प्रथम स्वतंत्र एवं प्रतापी राजा 'सीयक अथवा श्रीहर्ष' था। उसने अपने वंश को राष्ट्रकूटों की अधीनता से मुक्त कराया।
- परमार वंश में आठ राजा हुए, जिनमें सातवाँ वाक्पति मुंज (973 से 995 ई.) और आठवाँ मुंज का भतीजा भोज (1018 से 1060 ई.) सबसे प्रतापी थी।
- मुंज अनेक वर्षों तक कल्याणी के चालुक्य राजाओं से युद्ध करता रहा और 995 ई. में युद्ध में ही मारा गया। उसका उत्तराधिकारी भोज (1018-1060 ई.) गुजरात तथा चेदि के राजाओं की संयुक्त सेनाओं के साथ युद्ध में मारा गया। उसकी मृत्यु के साथ ही परमार वंश का प्रताप नष्ट हो गया। यद्यपि स्थानीय राजाओं के रूप में परमार राजा तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ तक राज्य करते रहे, अंत में तोमरों ने उनका उच्छेद कर दिया।
- परमार राजा विशेष रूप से वाक्पति मुंज और भोज, बड़े विद्वान थे और विद्वानों एवं कवियों के आश्रयदाता थे।
- कहा जाता है कि वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को राजा भोज ने ही बसाया था , तब उसका नाम भोजपाल नगर था , जो कि कालान्तर में भूपाल और फिर भोपाल हो गया। राजा भोज ने भोजपाल नगर के पास ही एक समुद्र के समान विशाल तालाब का निर्माण कराया था, जो पूर्व और दक्षिण में भोजपुर के विशाल शिव मंदिर तक जाता था।

- राजा भोज बहुत बड़े वीर और प्रतापी होने के साथ-साथ प्रकाण्ड पंडित और गुणग्राही भी थे। इन्होंने कई विषयों के अनेक ग्रंथों का निर्माण किया था। ये बहुत अच्छे कवि, दार्शनिक और ज्योतिषी थे। सरस्वतीकंठाभरण, श्रृंगारमंजरी, चंपूरामायण, चारूचर्या, तत्वप्रकाश, व्यवहारसमुच्चय आदि अनेक ग्रंथ इनके लिखे हुए बतलाए जाते हैं।

You just read: Paramaar Raajavansh Ka Itihaas Aur Mahatvapoorn Tathyon Ki Suchi